International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2016; Page No. 46-48

बघेलखण्ड में इतिहासकार अब्दुष समद खाँ का योगदान

डॉ. अर्चना पटेल
सहा. प्राध्यापक इतिहास विध्यांचल महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश
बघेलखण्ड में अनेको क्षत्रियों की रियासते व राज्य रहें है, जिसमें रीवा राज्य सबसे महत्वपूर्ण माना जायेगा। उसी राज्य की राजधानी जो बांधवगढ़ के पश्चात् रीवा में बनायी गयी थी उसमें रहने वाले एक जागरूक ईमानदार तथा विद्वान लेखक अब्दुश समद खाँ हुये है, जिन्होंने पाकिस्तान जाकर भी अपनी मातृ–भूमि भारत के रीवा नगर को भुलाना तो दूर की बात है। पूरी पुस्तक में यथासम्भव अनेकों स्थानों व्यक्तियों का वर्णन किया है जिससे प्रमाणित होता है कि वो एक सत्यवादी तथा मानवतावादी सफल लेखक थे, जिसका उदाहरणार्थ कुछ जिक्र करने का प्रयत्न किया जा रहा है।
मैने कनीज फातमा पुस्तकालय बिछिया रीवा से मिली उर्दू भाषा में प्रकाशित पुस्तक को पढ़कर तथा भाषा विधि वहाँ के सचिव आचार्य मास्टर अब्दुल गफ्फार खाँन जी की सहायता से उर्दू भाषा एवं लिपि हिन्दी भाषा एवं लिपि में करने का समुचित प्रयत्न किया जो विनम्रता पूर्वक प्रस्तुत है।

मूलशब्द: बघेलखण्ड, इतिहासकार, अब्दुश समद खाँ एवं योगदान

प्रस्तावना

तोहफम समदिया के लेखक ने भारत से पाकिस्तान जाने का वर्णन इस प्रकार किया है– "पाकिस्तान अगस्त 1947 में बना है। 8 मार्च 1948 ई. को मैं पाकिस्तान आ गया था। उस वक्त मेरे वालिद (पिता) मुन्सी अब्दुश सत्तार खाँ का सन् मुबारक तकरीबन 88–89 साल का था। और उनकी सेहत अच्छी थी। 1949 में मैने साहब से अर्ज किया कि आप भी कराची तसरीफ ले चले मगर वे तसरीफ नहीं ले आयें।"[1]

समद जी 30 नवम्बर 1949 को पुनः पिता के बीमारी की सूचना पर रीवा आये। 8–9 महीने तक उनकी सेवा की पासपोर्ट की मियाद में बढ़ोत्तरी न होने के कारण 10 अप्रैल 1955 ई. को ये वापस पाकिस्तान चले गये पुनः इनके पिता को लकवा रोग हो गया जिसके कारण 12 जुलाई 1955 ई. मंगल के दिन रीवा में देहान्त हो गया।[2]

खान जी का ननिहाल रीवा में ही थी उनके पिता का विवाह उमर शाह की सुपुत्री से हुआ था। उनकी नानी का देहान्त 1939 में रीवा नगर में हुआ था। समद खाँन के पिता पहले रीवा में कुछ समय तक सेवारत थे। फिर नागौद राज्य में लगभग 39 वर्ष सेवा कार्य में लगे रहे। तत्पश्चात् नौकरी से इस्तीफा (त्याग–पत्र) देकर अपनी जमीदारी की देखभाल करने लगे अब्दुश समद का जन्म तिथि 1886 है। समद जी की शिक्षा मफ्तब (प्राइमरी) से मकान में हुयी। मौलवी रहमान अली लेखक "तवारीख बघेलखण्ड" के माकान में मोलवी अब्बास अली शिक्षण कार्य किया करते थे। समद जी को मौलबी अब्दुश कादिर से भी शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ मौलवी अब्दुल कादिर साहब पं. शिव प्रसाद के माकान में मक्तब चलाते थे।[3] समद जी ने मौलवी रहमान अली के शिक्षण कार्य में अद्वितीय दिलचस्पी का वर्णन करते हुये बताया है कि कुरीन शरीफ को कण्ठस्त करने का भी एक विभाग उनकी जामा मस्जिद में था। हाफिज मोहम्मद यार दहकानी (कृषक) बालकों को कुरान रटवाया करते थे स्वयं उनकी स्मृति बहुत तीब्र थी। एक तीसरे मदरसे में भी समद ने शिक्षा पायी थी। एक मदरसा मीर रूस्तम अली ने स्थापित किया था। उसमें भी उन्होंने प्रवेश लिया था। वहाँ इन्होंने फारसी की पुस्तके गुलीस्ता और बहार दानिस्त का अध्ययन किया था।[4]

समद जी की 1906 में व माह अक्टूबर के रिबन्यू कमिश्नर के कार्यालय में अहलकार के पद पर नियुक्ति हो गयी खान साहब के पिता ने उनका विवाह 1910 में हमीदा बानों सुपुत्री अमरी बक्स सिद्धीकी मऊगंज से कर दी थी। समद जी एक निष्ठावान और लगनशील व्यक्ति थे जिसके कारण उनके विभागीय अधिकारी उनसे बड़े प्रसन्न रहते थे। वे अंग्रेजी भाषा नहीं जानते थे फिर भी हेड क्लर्क का पद सेसन जज के यहाँ मिल गया था। उन्हें रीवा राज्य के उत्तर, दक्षिण, पूर्व दिशाओं में सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ। समद जी ने 30 साल तक रीवा राज्य सेवा में व्यतीत किया। किन्तु वे दुख के साथ लिखते है कि "अब स्टेट की साज बाद मुलायजा हो कि एक मामुली सा कागज जिससे किसी सरकारी काम में कोई नुस्ख (कमी) पैदा न हुआ था। दफ्तर में महज 15 रोज तक रह गया। वे मेरी अलहदगी (अलगाव) का सबब (कारण) करार दिया गया। ताकि पेंशिन न देना पड़ा।[5]

समद खाँ ने अपनी पुस्तक तोहफये समदिया में अपने तिथिवार नोट्स से बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया है। वे लिखते है कि जब रीवा नगर में रहमान अली का मक्तब बन्द हो गया और बच्चो की इस्लामी शिक्षा का साधन न रहा उस समय उन्होंने दिसम्बर 1917 में एक इस्लामिया स्कूल स्थापित किया जो आज भी मोहल्ला घोघर में संचालित हो रहा है। पहले भी राज्य की ओर से सहायता मिल

रही थी और वर्तमान समय में भी मिल रही है। उन्होंने लिखाा है कि अपनी ही कौम की इज्जत अफजायी का फक्र मुझे हासिल न था। बल्कि शहर के हर हिन्दू मुशलमान काममनून (कृतज्ञ) हूँ। जो मुझे काम के वक्त होने की बात आम जनता ने की उसे ओल्डरीज महोदय एण्डमनिश्ट्रेशन रीवा में हुजूर मूं पेश की गयी। साहब ने लिखा यह अप दी अब्दूश समद खान। [6]

सन् 1942 में स्कूल कालेज के विद्यार्थियों ने हड़ताल की। 4 अक्टूबर 1942 को बग्ंला पर एक बैठक हुयी नगर में सम्मानीय नगरिकों को नोटिस द्वारा बुलाया गया। समद खाँ ने 19 अगस्त 1942 में विभाग को ये राय दी थी के हर विद्यार्थी के संरक्षकों से जमानत और मुजलका प्राप्त करना चाहिए। अपनी इस राय की एक नकल एण्डमनिस्ट्रेटर के यहाँ प्रस्तुत किया था जिस पर उन्हें ओल्डरीज ने धन्यवाद का पत्र 16.10.1942 को लिखा था।

समद खाँ ने कुछ तथ्य और कथ्य ऐसे अपनी पुस्तक में प्रस्तुत किये है, जो किसी और जगह मिलना असम्भव नहीं तो दूस्कर अवश्य है। उदाहरण स्वरूप उन्होंने एक घटना का उल्लेख किया हैं। जिसका प्रभाव इस बघेल क्षेत्र पर बड़ा दूरगामी पड़ा है–

अलीगढ़ मु. युनिर्वसिटी के तालिब इल्ब (विद्यार्थी) मोसूमा ख्वाजा ने जिनमें कौमी जज्बा था। रीवा जानकी पार्क के तफरीर (भाषण) की। जिसका असर हाजिरी ने जलसा (उपस्थित सभा गण) हिन्दू मुस्लिम में काफी हुआ। लेकिन स्पेशल पुलिस के एक एहेल, एहेलकार (एक अयोग्य कर्मचारी) ने उर्दू जमान से न वाकिफ (अन्भिज्ञ) था। गलत मतलब समझ कर रिपोर्ट कर दी जिसमें वे गिरफ्तार कर लिये गये। शहर में इस बेकसूर के गिरफ्तारी से ये जान पैदा (दुख का वातावरण) हो गया और एक कशीर मजमा ने अपनी फरियाद महाराजा गुलाब सिंह के साहब ज्यादा (सुपुत्र) महाराजा मार्तण्ड सिंह बहादुर तक पहुचानी चाही निनकी पैदाइस का जश्न 1 अप्रैल 1923 में बड़ी शान से मनाया गया था। खादिम (सेवक) उस वक्त रेयासती मु. लीग का निगरा था। चुनानचें मजमा के साथ किला पहुँचा महाराज के डीसी आये, और फरमाया की इसमें जो मुखिया हो वही दरवार से मिल सकता है। लिहाजा (अस्तु) मैं रव मौलवी जैदी साहब जाहिर हुए। महाराजा ममदूह (प्रसन्नीय) ने हाजरीन को कमाल समाअत (महान स्नेह) से बैठने की इज्जत बख्सी और तफसीली हालात समाअत फरमाये (सविस्तार स्थिति सुनी) और ईसात फरमाया की हम कागजात मुलाहयजा करके जल्द ही हुक्म देगे। चुनानचे (इसलिए) दो घण्टे के अन्दर उस बेकसूर को जेल से रिहा करा दिया। रीवा रेयासत के लिये यह कोई अनोखी बात न थी। बल्कि यहाँ के हर (शासक) अपनी रेयाया रेय्यत (प्रजा) की दिल जुयी (हृदय को प्रसन्न) हमेशा करते आये है।[7]

समद साहब और मौलवी असार हुसैन जैदी ने एक प्रतिनिधि मण्डल के रूप में उस काल के शासक महाराजा मार्तण्ड सिंह जू देव की सेवा में उपस्थित होकर अर्ज किया– संस्कृत की प्रार्थना में ऐसे शब्द और श्रद्धा का वर्णन है जिसके मानने की स्वीकृत इस्लाम नहीं देता। इस आशय के परिणाम स्वरूप एक समिति का गठन एम.एल. ए. द्वारा गठित की गयी जिसमें स्कूल और कालेजों में होने वाली प्रार्थना पर विचार किया गया और समिति ने सहानुभूति पूर्वक उदारता से एक दूसरी प्रार्थना हिन्दी भाषा में स्वीकार किया जिसमें सम्मिलित होना स्कूल और कालेज के विद्यार्थियों और स्टाफ को उपस्थित होना अनिवार्य करार दिया गया, और इस प्रार्थना के समय अनुपस्थित रहने वाले को अनुपस्थित घोषित किया जाएगा।[8]

समद जी भारत से पाकिस्तान जाने पर वहाँ 1953 में आल पाकिस्तान ऐजुकेशनल कान्फ्रेस काराची में हिस्सा लिया। और वहाँ के कार्य कारिणी सदस्य नियुक्त हुये।[9] शिक्षा अैर सेवा कार्य में उनकी अभिरूचि जो भारत में थी वहाँ भी बनी रही वहाँ भी वे कादिरिया स्कूल ऐलेसुन्नत वलजमात शिखर और महबूब हार्द स्कूल के सदस्य हुये।[10]

तोहफेय समदिया वैसे तो केवल अट्ठासी (88) पृष्ठों की एक साधारण पुस्तक है किन्तु लेखक ने ज्ञान की बहुत सी बहुमूल्य बातें ऐसी दर्ज की है जो अन्य लेखक के कलम से नहीं प्रकट हुयी। वे पाकिस्तान गये तो अवश्य किन्तु बघेलखण्ड भारत की याद को हृदय से लगाये रखे। लिखते है–"शिखर वाटर वर्कश पहाड़ी के करीब मिशन की तरफ नौगजा पीर का मजार है। ये न मालुम हो सका कि आपका अस्ल नाम क्या है। बर्रेशकीर (बृहद भारत) में नौगजा पीर बहुत शहरों में है। मैने खुद एक जंगली मुकाम ऊचेहरा रियासत नागौद में भी एक कब्र नौगजा पीर की भी देखी है। जिसका तजकिरा शुरू में आ चुका है।[11]

रियासत नागौद के शीर्षक के अन्तर्गत समद जी ने लिखा है कि– मुल्हिक (अटैक) रियासत रीवा मुल्क बघेलखण्ड के अन्दर है। यहाँ अक्सर आना–जाना होता रहा। बल्कि किबला बालिद साहब इसी स्टेट में मुलाजिम थे। यहाँ एक तहसील ऊँचेहरा हैं जिसमें भी एक बुजुर्ग का मजार है। पुराने जमाने की नौगज लम्बी खाम कब्र दरिया के किनारे जंगली मुकाम में हैं मशहूर है कि ये नौ गजा पीर है। नाम तो मेरे ख्याल से कब्र की लम्बाई से लोगों ने रख लिया है।[12]

समद जी ने अपनी पुस्तक के हिस्सा चहरूम (चौथे भाग) में प्रारम्भिक पतिंयो में ऐसे वाक्य लिखे है जिससे ज्ञात होता है कि उनकी विचारधारा भावना और दृष्टिकोण क्या थी जिस को प्रकट करने के लिए उन्होंने लेखनी उठायी और अपने पाठकों को अपना सहभागी बनाया।

"गौर फिक्र से मैने इस हकीकत को महसूस किया है कि इन्सान को महजूद (सीमित) मिस्ल तेली के बैल अपनी जिन्दगी गुजारना जेवा (समुचित) नहीं उसका फर्ज है कि ये देखे कि खालिके कुल सैका कायनात (समस्त ब्रम्हाण्ड के रचयिता) कि तखलीफ (रचना या सृष्टि) से क्या मनसा (लक्ष्य) है। बन्दा मखलुकाते आलम में असरफ और असजल (श्रेष्ठ) है और उसने अपनी इल्मोदानिस्त (ज्ञान और बुद्धि) से दुनिया में जो कामयाबिया हासिल की है। वे इन्तहायी हैरत अंग्रेज (महान आश्चर्यजनक) है।[13] इसी चौथे अध्याय में लेखक ने अजमेर शरीफ शहर, जयपुर शहर, देलही शहर, आगरा शहर, अलीगढ़, हैदराबाद दकन जिला रोहतक जिला ऐसार मुकाम पानीपत कस्बा सेनापति शीर्षक के अन्तर्गत उन्होंने वहाँ की

भौगोलिक ऐतिहासिक तथ्यों का वर्णन किया है। विशेष रूप से उनकी दृष्टि सूफी सन्तों का सम्बन्ध विशेष रूप से केन्द्रित रही है। उन्होंने रीवा के सूफी सन्तो का वर्णन किया है फिर आगे रीवा राज्य बाधवगढ़ का किला, पन्ना रियासत नागौद के सम्बन्ध में अपने अनुभव पूर्ण जीवन वृतान्त के साथ इन स्थानों का वर्णन किया है।

इतिहाकार का ज्ञान लेखक को जहाँ नहीं था। वहाँ उसने कथ्य और तथ्य को तोड़ने मड़ोने का प्रयत्न कदापि नहीं किया।

पन्ना रियादत शीर्षक के अन्तर्गत अन्तिम पंक्तियों में लेखक ने लिखा है – खास शहर पन्ना में मन्दिर है उसमें सालाना मेला होता है। दूर दराज से जायरीन (यात्री) आते है। मन्दिर के अन्दर कोई सूरत नहीं है ऐले हूनूद का अकीदा (हिन्दुओं का विश्वास) है कि प्राणनाथ का स्थान है और कुछ लोग जी साहब उनका नाम बताते है। बाहर हाल कुछ भी हो कोई बुजुर्ग (महान) हस्ती जरूर है, जो मखलूके खुदा को (जनता को) मुखातिब किये हुये है।[14]

अन्त मे ये कहना सार्थक होगा कि जो लक्ष्य और उद्देश्य लेखक ने अपनी पुस्तक लेखन का अपनी पुस्तक में उल्लेख किया है। वे सतप्रतिशत सत्य पर आधारित है। उन्होंने अपने वंशजो के लिए जो वंश वृक्ष छोड़ा है। वे उनके लिये जो लाभदायक है ही, इतिहास के जिज्ञासुओं के लिए भी प्रकाश दीप है। बघेलखण्ड के वे ही इस माटी की सुगन्ध तो उनके प्रत्येक शब्द में आती ही है। उनकी दृष्टिकोण ब्रम्हाण के रचयिता की सृष्टि को समझने बूझने की अत्यन्त अभिलाषा थी जिसके कारण उन्होंने अपने जीवन के बहुमूल्य कार्यों के साथ–साथ अपने समाज अपने वातावरण की भी सच्ची और अच्छी झांकी सहज और सरल भाषा में दिखाने का सफल प्रयास किया है। ये पुस्तक हिन्दी लिपि में यदि छप जाए तो बहुत लाभदायक सिद्ध हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. तोहफेंय समदिया लेखक अब्दुश समद खाँ पृ. 19
2. तोहफेंय समदिया लेखक अब्दुश समद खाँ पृ. 19–20
3. तोहफेंय समदिया लेखक अब्दुश समद खाँ पृ. 10
4. तोहफेंय समदिया लेखक अब्दुश समद खाँ पृ. 20–21
5. तोहफेंय समदिया लेखक अब्दुश समद खाँ पृ. 23
6. तोहफेंय समदिया लेखक अब्दुश समद खाँ पृ. 23–24
7. तोहफेंय समदिया लेखक अब्दुश समद खाँ पृ. 24
8. तोहफेंय समदिया लेखक अब्दुश समद खाँ पृ. 3
9. तोहफेंय समदिया लेखक अब्दुश समद खाँ पृ. 24
10. तोहफेंय समदिया लेखक अब्दुश समद खाँ पृ. 25
11. तोहफेंय समदिया लेखक अब्दुश समद खाँ पृ. 88
12. तोहफेंय समदिया लेखक अब्दुश समद खाँ पृ. 72
13. तोहफेंय समदिया लेखक अब्दुश समद खाँ पृ. 56
14. तोहफेंय समदिया लेखक अब्दुश समद खाँ पृ. 72